🏫 **बी.एड सत्रीय कार्य**

विषय: शिक्षा एवं समाज

टॉपिक: पाठ्यक्रम की रूपरेखा एवं पाठ्य-पुस्तकों में जेंडर रूढ़िवादिता

नाम: ___________

कॉलेज का नाम: ___________

वेबसाइट: https://rlkclasses.in

टेलीग्राम चैनल: https://telegram.me/rlk_classes

✳️ परिचय

शिक्षा मात्र किताबी ज्ञान का संचय नहीं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन, मूल्य निर्माण तथा समानता-सशक्तिकरण का महत्वपूर्ण माध्यम है। भारत जैसे विविध सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश में, पाठ्यक्रम और पाठ्य-पुस्तकें बच्चों के विचार, दृष्टिकोण, सामाजिक व्यवहार और लैंगिक समझ को स्थापित करने में निर्णायक भूमिका निभाती हैं। यदि इन शैक्षणिक सामग्रियों में जेंडर-रूढ़िवादिताएँ मौजूद हों, तो शिक्षा स्वयं असमानताओं को पनपने का अवसर देती है। इसलिए इस अध्ययन का उद्देश्य है कि पाठ्यक्रम की रूपरेखा (curriculum framework) तथा पाठ्य-पुस्तकों में जेंडर-रूढ़िवादिता के स्वरूप, कारण एवं समाधान-उपायों का विश्लेषण किया जाए।

✳️ पाठ्यक्रम रूपरेखा और जेंडर-समीक्षा

भारत में NCERT द्वारा विकसित पाठ्यक्रम रूपरेखा (Curriculum Framework) व विभिन्न राजकीय बोर्डों द्वारा स्वीकृत पाठ्य-पुस्तकें देश की शिक्षा नीति और समाज का प्रतिबिंब होती हैं। हालांकि नीति स्तर पर जेंडर समानता का समर्थन है, पर व्यवहार में पाठ्य-पुस्तकों में जेंडर-रूढ़िवाद की समस्याएँ अब भी विद्यमान हैं।

उदाहरण के लिए, अनुसंधान में पाया गया कि पाठ्य-पुस्तकों में महिलाओं का प्रतिनिधित्व बहुत कम है, और दिखाए जाने वाले व्याख्यात्मक चित्रों तथा कहानियों में महिलाएँ घरेलू, सहायक या पारंपरिक भूमिकाओं में प्रस्तुत होती हैं। (The Indian Express)

पाठ्यक्रम रूपरेखा में जेंडर-सेंसिटिव सामग्री को शामिल करने के निर्देश दिए गए हैं, जैसे:

- "पाठ्य-पुस्तकें ऐसी हों कि उनमें लड़के-लड़कियों की कहानियाँ, भूमिकाएँ, उदाहरण समान हों"। (dgetbedcollege-edu.org)
- "भाषा व उदाहरणों में जेंडर-तटस्थता हो"। (The Indian Express)

परंतु वास्तविक चित्रण में इन निर्देशों को पर्याप्त रूप से लागू नहीं पाया गया है।

✳ पाठ्य-पुस्तकों में जेंडर-रुढ़िवादिता यानी स्टिरियोटाइप्स

पाठ्य-पुस्तकों में जेंडर-रुढ़िवादिता कई रूपों में प्रकट होती है:

1. प्रातिनिधित्व की कमी (Under-representation)

महिलाओं का विद्यालयी सामग्री में पुरुषों की तुलना में बहुत कम प्रतिनिधित्व है। उदाहरण के लिए, कुछ अध्ययन बताते हैं कि NCERT एवं राज्य बोर्ड की पुस्तकें 34 % ही महिला-लिंगित शब्दों का उपयोग करती हैं, जबकि 66 % पुरुष-लिंगित होते हैं। (Careers360)

2. भूमिकाओं का रूढ़ीकरण (Stereotyped roles)

पुस्तकों एवं चित्रों में महिलाएँ अक्सर घरेलू कामों, देखभाल-कार्य, सामाजिक सेवा या शिक्षा-कामकाजी भूमिका में प्रदर्शित होती हैं, जबकि पुरुष नेतृत्व, बाहरी कामकाज, व्यवसाय जैसी भूमिकाओं में दिखते हैं। (Papanda)

3. भाषाई एवं दृष्टिगत पूर्वाग्रह (Linguistic & Visual bias)

https://rkclasses.in

पाठ्य-पुस्तकों में ऐसा भाषा प्रयोग होता है जो पुरुष को सक्रिय, निर्णायक, बहादुर तथा महिला को निष्क्रिय, सहायक, आश्रित आदि दिखाता है। उदाहरण स्वरुप- "माँ खाना बनाती है", "बेटा खेत में काम करता है" जैसी कहानियाँ आम हैं। (The Indian Express)

4. छोटी-छोटी संदर्भों में असमानता (Subtle bias)

छात्रीनियों द्वारा व्यवहार में "मिल्किल" की भूमिका, "घर का काम करना" आदि जैसे संदर्भ, तथा छात्रों द्वारा "विज्ञान/गणित खतरनाक" जैसी रुढ़ियाँ बनाना, सब शिक्षा सामग्री में शामिल हैं। (cuperjournal.org)

इन सबका परिणाम होता है- बच्चों में यह संदेश जाता है कि पुरुष-लिंग की भूमिका मुख्य, बाहरी व निर्णायक है और महिला-लिंग की भूमिका सहायक, घरेलू व सीमित है। यह स्थायी सोच जेंडर-समानता के लिए बाधक है।

✳ जेंडर-रुढ़िवादिता के प्रभाव

- विद्यार्थी-बालिकाओं की अपेक्षाएँ सीमित होती हैं- लड़कियाँ स्वयं को "घर की देखभाल" तक सीमित समझ सकती हैं।

- व्यवहार और करियर विकल्प सीमित हो जाते हैं- उदाहरण के लिए, पुस्तकें दिखाती हैं कि "डॉक्टर बनेगा पुरुष", "अध्यापिका बनेगी महिला"। (The Times of India)

- शिक्षण-प्रक्रिया आरंभ से ही बच्चों को लैंगिक भूमिकाओं की समझ देती है, जिससे मानसिकता में बदलाव कठिन होता है।

https://rlkclasses.in

- सामाजिक निर्माणवादी दृष्टि से देखा जाए, तो पाठ्य-पुस्तकें जेंडर सामाजिककरण (gender socialization) का अहम माध्यम बन जाती हैं। (Papanda)

✳ समाधान एवं सुझाव

1. **पाठ्य-पुस्तक लेखन में जेंडर-सेंसिटिविटी सुनिश्चित करें-** कहानियों, उदाहरणों, चित्रों में पुरुष-महिला दोनों की भूमिकाएँ संतुलित हों।
2. **पाठ्य-क्रम रूपरेखा में जेंडर-समानता को प्रमुख बनाना-** प्रत्येक विषय में जेंडर-सुझाव समाहित हों।
3. **शिक्षक प्रशिक्षण एवं मूल्यांकन-** शिक्षकों को जेंडर-रुढ़ियों के प्रति जागरुक करना और स्कूल-पुस्तकें समय-समय पर जेंडर-ऑडिट से गुजरें।
4. **पुस्तक सामग्री की समीक्षा एवं सुधार-** राज्य/केंद्रीय पाठ्य-पुस्तक बोर्ड द्वारा नियमित रुप से जेंडर-समीक्षा करें। (The Indian Express)
5. **लड़कियों को प्रेरित करने वाली कहानियाँ और मॉडल्स शामिल करें-** जिसमें विज्ञान, खेल, राजनीति इत्यादि में सफलता-प्राप्त महिलाएँ हों।
6. **हाई स्कूल स्तर से ही जेंडर-विविधता एवं समावेशन का पाठ-** पुस्तकें ट्रांसजेंडर, अन्य लिंग-पहचान, जेंडर-स्टीरियोटाइप्स पर खुली चर्चा करें।

✳ निष्कर्ष

https://rlkclasses.in

भारत में पाठ्यक्रम की रूपरेखा एवं पाठ्य-पुस्तकें शिक्षा का आधार हैं, लेकिन यदि उनमें जेंडर-रुढ़िवादिता शामिल हो, तो यही माध्यम असमानता को पुनः उत्पादित करता है।
पुस्तकों में जेंडर-सेंसिटिव लेखन न केवल मानवधिकार-समानता की दिशा में आवश्यक है, बल्कि यह शिक्षार्थियों की सोच को व्यापक, समावेशी और न्याय-प्रवृत्ति वाली बनाती है।
यदि हम चाहते हैं कि हमारा सामाजिक-शैक्षणिक परिवेश जेंडर-समान हो, तो पाठ्य-सामग्री को जेंडर-न्युट्रल, जागरुक और संवेदनशील बनाना अनिवार्य है।

🏫 **बी.एड सत्रीय कार्य**

विषय: जेंडर अध्ययन (Gender Studies)

टॉपिक: जेंडर, संस्कृति एवं संस्था

नाम: __________

कॉलेज का नाम: __________

वेबसाइट: https://rlkclasses.in

टेलीग्राम चैनल: https://telegram.me/rlk_classes

✳️ परिचय

समाज मानव जीवन का आधार है और इस समाज को संचालित करने में जेंडर, संस्कृति एवं संस्थाओं की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।
"जेंडर" केवल जैविक भेद नहीं है, बल्कि यह एक सामाजिक एवं सांस्कृतिक निर्माण (Social Construction) है, जो यह निर्धारित करता है कि पुरुषों और महिलाओं से क्या अपेक्षा की जाती है।

https://rlkclasses.in

संस्कृति वह माध्यम है जो इन अपेक्षाओं को स्थिर करती है, और सामाजिक संस्थाएँ (जैसे परिवार, धर्म, शिक्षा, राजनीति, अर्थव्यवस्था आदि) इन्हें व्यवहार में लागू करती हैं।

✳ जेंडर की अवधारणा

“जेंडर” का अर्थ केवल “पुरुष” और “महिला” के बीच जैविक भेद नहीं, बल्कि समाज द्वारा निर्मित भूमिकाओं, अपेक्षाओं और व्यवहारों से है।
पुरुषत्व (Masculinity) और स्त्रीत्व (Femininity) के मानक समाज बनाता है, और इन्हीं मानकों के अनुसार व्यक्ति की पहचान तय होती है।
उदाहरण के लिए – समाज कहता है कि “पुरुष मजबूत, कमाऊ, निर्णयकर्ता होता है” जबकि “महिला कोमल, भावनात्मक और पालनकर्ता होती है।”
यही सोच जेंडर असमानता का मूल बनती है।

✳ संस्कृति और जेंडर

संस्कृति वह ढांचा है जिसमें समाज के मूल्य, परंपराएँ, रीतियाँ और जीवन शैली निहित होती है।
संस्कृति यह तय करती है कि पुरुष और महिला कैसे व्यवहार करेंगे, क्या पहनेंगे, कहाँ काम करेंगे, और उनके अधिकार क्या होंगे।
भारतीय संस्कृति में एक समय महिलाओं को अत्यधिक सम्मान दिया गया – “यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता:”
परंतु बाद के काल में धार्मिक, सामाजिक और आर्थिक कारकों के कारण महिला की स्थिति गौण हो गई।
आज भी कई सांस्कृतिक परंपराएँ – जैसे दहेज, बाल विवाह, लिंग चयन – जेंडर असमानता को बनाए रखती हैं।

✳ सामाजिक संस्थाएँ और जेंडर

सामाजिक संस्थाएँ समाज के संगठन की इकाइयाँ हैं — जैसे परिवार, धर्म, शिक्षा, राजनीति और अर्थव्यवस्था।
ये संस्थाएँ व्यक्ति के व्यवहार को दिशा देती हैं।

1. परिवार (Family):

परिवार जेंडर समाजीकरण का पहला माध्यम है। बच्चे परिवार में देखकर सीखते हैं कि पिता बाहर का काम करते हैं और माता घरेलू कार्यों की ज़िम्मेदारी निभाती हैं।
इससे बच्चों के मन में लिंग आधारित भूमिकाएँ स्थायी हो जाती हैं।

2. धर्म (Religion):

धर्म समाज के मूल्य और मानदंड निर्धारित करता है। कई धार्मिक मान्यताएँ पुरुष प्रधानता को बढ़ावा देती हैं, जैसे कि महिलाओं का सीमित धार्मिक अधिकार या नेतृत्व भूमिकाओं में कमी।

3. शिक्षा (Education):

शिक्षा समानता का माध्यम हो सकती है, परंतु कई बार यह जेंडर पूर्वाग्रहों को दोहराती है — जैसे पाठ्यपुस्तकों में महिला का सीमित चित्रण या पेशों का जेंडर आधारित विभाजन।

4. राजनीति (Politics):

राजनीतिक संस्थाएँ नीतियाँ बनाती हैं जो महिलाओं की भागीदारी को प्रभावित करती हैं। पंचायतों में 33% आरक्षण जैसी नीतियाँ जेंडर समानता की दिशा में प्रयास हैं।

5. अर्थव्यवस्था (Economy):

काम के अवसरों में असमानता, वेतन-भेद और असंगठित क्षेत्र में महिलाओं का शोषण जेंडर असमानता के प्रमुख उदाहरण हैं।

---

https://rlkclasses.in

✳ जेंडर असमानता के सांस्कृतिक कारण

1. **पितृसत्तात्मक संरचना (Patriarchal System):**
   समाज में पुरुष सत्ता का प्रभुत्व ऐतिहासिक रूप से स्थापित है।

2. **धार्मिक-सांस्कृतिक परंपराएँ:**
   कई परंपराएँ महिलाओं को केवल गृहकार्य तक सीमित करती हैं।

3. **सामाजिक रुढ़िवादिता:**
   "लड़कियाँ घर संभालें", "लड़के बाहर कमाएँ" जैसी धारणाएँ पीढ़ी दर पीढ़ी चलती आई हैं।

4. **शिक्षा और आर्थिक निर्भरता की कमी:**
   महिलाओं की शिक्षा एवं रोजगार में कम भागीदारी के कारण जेंडर असमानता बढ़ती है।

✳ जेंडर समानता की दिशा में प्रयास

1. **संवैधानिक अधिकार:**
   भारतीय संविधान के अनुच्छेद 14, 15, और 16 समानता के अधिकार की गारंटी देते हैं।

2. **नीतियाँ और योजनाएँ:**
   'बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ', 'महिला सशक्तिकरण मिशन', और 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020' ने जेंडर समानता को बढ़ावा दिया है।

https://rlkclasses.in

3. **शिक्षा में सुधार:**

स्कूल पाठ्यक्रम में जेंडर-सेंसिटिव सामग्री, महिला रोल-मॉडल, और समान अवसरों को जोड़ा जा रहा है।

4. **सामाजिक जागरूकता:**

मीडिया और सोशल प्लेटफॉर्म जेंडर आधारित भेदभाव के खिलाफ लोगों को जागरूक कर रहे हैं।

✳ भारतीय संदर्भ में जेंडर और संस्कृति का संबंध

भारतीय समाज बहु-सांस्कृतिक है, इसलिए जेंडर और संस्कृति का रिश्ता जटिल है।
कई समुदायों में महिलाएँ नेतृत्व करती हैं (जैसे मेघालय की मातृसत्तात्मक जनजातियाँ), तो कहीं-कहीं उन्हें निर्णय-सत्ता से वंचित रखा जाता है।
यह विविधता दिखाती है कि जेंडर असमानता कोई प्राकृतिक सत्य नहीं, बल्कि सांस्कृतिक निर्माण है, जिसे शिक्षा और नीति के माध्यम से बदला जा सकता है।

✳ निष्कर्ष

जेंडर, संस्कृति और सामाजिक संस्थाएँ परस्पर जुड़ी हुई हैं।
संस्कृति जेंडर भूमिकाएँ बनाती है, संस्थाएँ उन्हें स्थिर करती हैं, और समाज उन्हें दोहराता है।
यदि हमें समान और न्यायपूर्ण समाज बनाना है, तो जेंडर-संवेदनशील संस्कृति और संस्थाओं का निर्माण आवश्यक है।
शिक्षा इस परिवर्तन की सबसे प्रभावशाली शक्ति है, जो नई पीढ़ी को रुढ़ियों से मुक्त सोचने की क्षमता देती है।

---

https://rkclasses.in

✳ संदर्भ

1. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 – भारत सरकार

2. "Gender and Society" – Sylvia Walby

3. "Women and Social Change in India" – Neera Desai & Maithreyi Krishnaraj

4. https://rlkclasses.in

5. https://telegram.me/rlk_classes

https://rlkclasses.in